वर्तमान राजनीतिक चिंतन और महाभोज

*डॉ. जयश्री बन्हाटे

किसी न किसी वातावरण के फलस्वरूप आज सामान्य जन जीवन विचलित है । सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक यह तीन कारण आज आम आदमी के जीवन को प्रभावित करती है । राजनीति और अर्थ के कारण समाज में भी उथल-पुथल मची रहती है । राजनीतिक कायापालट के साथ देश में एक प्रवृत्ति दिखायी देती है । राजनीति और अपराध दोनों बातें मानों साथ साथ चलती हुई नजर आती है । जब चुनाव का सिलसिला शुरु होता है तब घोषित किया जाता है कि जिनपर कोई अपराधिक मामला दर्ज हो उसे टिकट न दिया जाय किंतु वास्तव में देखा जाता है कि ज्यादातर उन्हीं लोगों को ही टिकट दिया जाता है । समाज में उनकी प्रतिमा स्वच्छ-पवित्र नजर आती है, उनका वर्तन रहन-सहन अच्छा दिखायी तो देता है किंतु अंदरूनि मामला कुछ और ही होता है । गरीबी को और गरीब बनाने में वे जादा सक्षम दिखायी देते हैं । अमीरों को मोहरा क्यों नही बनाया जाता? इस प्रश्न का उत्तर आज संशोधन का विषय है ।

कभी कभी राजनीतिज्ञ अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अपराध और अपराधियों का सहारा लेते दिखाप्री देते है । वर्तमान समप्र में हम देख रहे हैं कि जो अच्छा खासा पैसा लिये हुए संपन्न है अमीर है प्रतिष्ठित है यदि उनपर पूलिस और न्यायव्यवस्था की कडी से कडी पाबन्दी क्यों न लगायी गयी हो , उनका राजनीतिक प्रचार - प्रसार के लिए इस्तेमाल किया जाता है । उनकी प्रतिष्ठा तनिक भी कम नहीं होती वरन् अपराध ही उनके लिए प्रसिध्दी का वरदान लेकर प्रस्तुत होता है । राष्ट्रीय अपराध के क्षेत्र में आकर तो उन्हें और भी प्रसिध्दी प्राप्त होती है । राजनीति के ऐसे ही माहौल को महाभोज में चित्रित हम देखते है । आम आदमी की त्रासदी, करूणा,ममता,संघर्ष और पीडा की सचाई आज के राजनीति का पैया है । इन्ही के बलबूते पर ही कुछ सफेदपोश राजनीतिक फलते-फुलते है । वैसे देखा जाय तो देश में हरिजन तथा खेत-मजदूरोंपर जो अत्याचार का सिलसिला जारी है उनका भी एक इतिहास है । महाभोज भी इसी त्रासदी को उभारता है, अभिव्यक्त करता है । प्रकाशित करता है । महाभोज समकालीन राजनीतिक परिवेश से सम्बन्ध, उपन्यास है, जिसमें राजनीति मे प्रविष्ट मूल्यहीनता, शैतानिप्रतता, नैतिक सडाँध का अत्प्रंत प्रर्थाथ और सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है । (1)

महाभोज शीर्षक किसी की मृत्य के भोज से लेकर गिध्दों के शव-भोजन तक की स्थिति की त्रासदी को अंकित करता है । लावारिस लाश को गिध्द नोंच नोंच कर खा जाते हैं यउपन्यास का प्रारंभ वाक्य हैं । साथ ही किसी दलित का मरना ,सत्तासीन, विरोधी दल, पत्रकार,पुलिस सब के लिए एक खुशी -उत्सव-त्यौहार समान होता है । लावारिस लाश पर जुटते हैं,जबकी दूसरों के घर की आग पर अपनी रोटी सेंकनेवालों के लिए सिर्फ जलाशय महत्वपूर्ण हैं , दलित या हरिजन की हो तो और भी बेहतर । हरिजनों के जलाए जाने के और बाद में बिसू के मर जाने पर मंत्रियों , नेताओं और अखबारनबीसों का जमाव का किसी जलाशय पर जुटे गिध्दों की याद दिलाता है । गिध्दों की सी क्रूरता लिए करूणा और सम्वेदना का कारोबार करनेवाले राजनीतिज्ञ अफसर और पुलिस बल के चरित्र का उदघाटन इस उपन्यास में तीखेपन से हुआ है ।(2)

बिसेसर को लावारिस कहा है किंतु वह तो लावारिस नहीं । उसे माँ भी है बाप भी है । उसकी लाश सडक के किनारे पायी गयी इसलिए लावारिस का खयाल प्रस्तुत है । सरोहा गाँव शहर से बीस मिल दूरी पर है । किंतु आज यह दूरी खतम हो गयी है । जैसे ही यह खबर शहर में पहुँची, वहाँ से मंत्रियों,नेताओं,अरबबारवासों के गाडियों का ताँता लग गया । आग से उठनेवाले धुएँ के बादल तो एक दिन में छँट गये पर शहरी गाडियों से उठनेवाले धूल के बादल कई दिन तक मँडराते रहे । (3) झोपडियों में आग लगने के बाद जो परिस्थिति उत्पन्न हुई थी । उस दर्दनाक हादसे से विरोधी दल प्रखरता से सहानुभूतिवश सामने आता दिखायी देता है ।अखबारों में सचित्र ब्यौरा दिया जाता हैं । मुख्यमंत्री के इस्तीफे की माँग की जाती हैं । लेकिन मुख्यमंत्री को लगा कि जब तक वे मुजरिम का पत्ता नहीं लगाते तबतक उनकी आत्मा बोझमुक्त नहीं होगी । चुनाव की परिस्थिति आते देख सरोहा गाँव की छोटी छोटी घटना को अहमियत दी जाती हैं । राजनीतिक स्वार्थी प्रवृत्ति को यहां प्रखरता से चित्रित किया गया है । हरिजन बस्ती के वोट प्राप्त करने के लिए, उनकी ओर से सॉफ्ट कॉर्नर प्राप्त करने के लिए राजकीय लोगोंमें होड मची हुई नजर आती है । आगवाली घटना के तुरंत बाद ही बिसेसर की मृत्यु की घटना से गाँव ओंर शहर की वातावरण में जो तबदीली आती है उसका वर्णन उपन्यास में प्रस्तुत है । बिसेसर की मौत को देखकर हवालदार, थानेदार तुरंत हाजिर होते है । लोगों के बयान-जबर्दस्ती लोगों से उगलवाया जाता है । लाश को चीर -फाड के लिए शहर ले जाया जाता है दुसरी ओर घटना की चीर-फाड का सिलसिला । सच पूछा जाये तो बडा न आदमी होता

* कला-वाणिज्य व होमसायन्स महिला महाविद्यालय, जलगांव, महाराष्ट्र ।

है न घटना । यह तो बस मौके-मौके की बात होती है । मौका ही ऐसा आ पडा है । इस समय तो सरोहा में पत्ते का हिलना भी एक घटना की अहमियत रखता है । डेढ महिने बाद ही तो चुनाव है । या उपचुनाव, विधानसभा की एक सीट भर का फिर भी है महत्वपूर्ण । इस सीट के लिए भूतपूर्व मुख्यमंत्री सुकूल बाबू खुद खडे हो रहे हैं । सुकूल बाबू क्या खडे हो रहे है, समझ लिजिए पिछले चुनाव में हारी हुई पूरी पार्टी खडी हो रही है, खम ठोककर ...ललकारती हुई .....सत्तारूढ पार्टी के पूरे अस्तित्व को चुनौति देती हुई ।(4)

पिछले चुनाव में हारने के बाद उन्होंने राजसन्यास लेने का निर्णय लिया और बाकी जिंदगी जनसेवा के लिए बिताने का विचार रखा । किंतु चुनाव आते ही उन्होंने निर्णय बदल डाला । चुनाव के लिए खडे होने की जनता की सच्ची सेवा उच्च पद पर बैठकर ही की जा सकती है।

इन बातों से ऐसा एहसास होता है कि प्रत्येक आदमी आज की परिस्थिति में मौका सामने आनेपर उसे हासिल करने में जरा भी चूक नहीं करता भले ही वह गृहस्थाश्रम या राजनीति के दायरे से अलग होता जा रहा हो तो फिर भी उन परिस्थितियों के साथ फिर से चलने लगता है । कहा ही गया है कि राजनीति ऐसा चस्का है जो छूटते ही छुटता नहीं । इस चुनाव के फलस्वरूप गाँव की हर घटना को मंत्रीमंडल चुनाव के साथ जोडी जाती है । देखा जाता है । परखा जाता है । नहीं तो अन्यथा और दिन होते तो क्या बिसू और बिसू की मौत। आज भी राजनीतिक चिंतन में इन्हीं बातों की अहमियत दिखायी देती है । अतिरेकी हमला में होटल ताज, ओबेरॉय, कामा हॉस्पीटल, व्ही.टी स्टेशन पर जो घटनाएँ घटित हुई । अचानक हुए हमले के कारण उत्पन्न परिस्थिति उनका ब्यौरेवार वर्णन आज छायांकित और चित्रांकित किया जाता है। पुलिस अधिकारियों ने इन हमलों से मुकाबला करने का यशस्वी प्रयत्न किया और शहीद हो गये । आज राजनीतिक जागृति के कारण इन सब बातों को गौर से देखा जाता है। जो जनता इस हादसे में मौत के मुँह में आ गयी उनकी परिस्थिति-हालत आदि बातों को अहमियत दी जा रही है । इसके पीछे सामाजिक और राजनीतिक जागरुकता ही महत्वपूर्ण है । यदी नेतागण कुछ करेंगे तो सिंहासन पर बैठने के अधिकारी है नही तो सिंहासन खाली करना पडता है। इसमें जनता जरा भी चूक नहीं करती जो अधिकारी और जनता इसमें शहीद हुए उनके परिवार के प्रति उचित न्याय और सहानुभूति आज के परिस्थिति में महत्वपूर्ण मायने रखते है ।

आज के राजनीतिक चिंतन को प्रस्तुत करनेवाली कविता देखिए-

सदियों की ठण्डी-बुझी राख सुगबुगा उठी ,मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है, दो राह , समय के रथ का घर्घर नाद सुनो, सिंहासन खाली करो कि जनता आती है। मानो, जनता हो फूल जिसे एहसास नहीं जब चाहो तभी उतार सजा लो दोनों में , लेकिन, होता भूडोल बवण्डर उठते हैं, जनता जब कोपाकुल हो भृकुटि चढाती हैं, दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो, सिहासन खाली करो कि जनता आती है ।(5)

महाभोज के सत्ताधीश पार्टी के प्रमुख नेता दासाहब एक प्रतिकात्मता लिये हुए हैं। धीर-गम्भीर-संयमित -संतुलित व्यक्तिमत्व नेता के लिए आवश्यक गुणों का प्रतीक दा साहब की उपन्यास में उपस्थिति एक सिम्बाल लिये हुए हैं। अपना देश और देशी पध्दती उन्हें प्रिय हैं ।गांधी नेहरू पथप्रदर्शक, गीता उनकी प्रेरणा है । किंतु विडंबना यह हैं कि उनके लडके-बच्चें अंग्रेजी सीखते है, इम्पोर्टेड वस्तुएँ और इम्पोर्टेड भाषा का इस्तेमाल करते हैं। हरिजनो और बीसू की लाश पर जुटे गिध्दों य में सबसे पहले दासाहब का क्लोजअप य उपन्यास में उभारा है। कथनी और करनी में अंतर दासाहब का और ही स्वीटकोटेड य चरित्र है। सूननेवाले को लगता है कि गांधी और गीता की दुहाई देनेवाला यह व्यक्ति आदर्शवादी नैतिक और इमानदार है जो मुख्यमंत्री के कुर्सीपर स्थीत है। आज राजनीति में हम देखते है हर नेता का एक खास आदमी होता है। उसी के व्दारा उनका जनता से सही-गलत जो भी हो संपर्क रहता है। दासाहब का भी लखनसिंह एक खास आदमी है । दसवी पास लखनसिंह दा साहब का थैला उठाये-उठाये उनके पीछे चलता था हर समय। दा साहब का प्रतिनिधि बनकर चुनाव के लिए खडा किया गया है। दा साहब का उसुल है सहकार्य करनेवाले को मंजिल तक पहुँचा दो। छोटे से छोटे आदमी को तरक्की का पूरा मौका दासाहब देते है । जोरावर कें कारण हरिजनों के वोट सुकूल बाबू के पक्ष में जा सकते हैं। लखनसिंह के क्रोधाविष्ट होनेपर दा साहब आवेश को रोकने को कहते है। ङ्गआवेश राजनीति का दुश्मन है। राजनीति में विवेक चाहिए। विवेक और धीरज य(6) जनता को क्रोध से शांति की ओर ले जाने की कला दा साहब ही जानते है। इसलिए आगजनी वाली घटना होने पर जनता में वातावरण की सौम्यता आये इस दृष्टी से दा साहब ने ङ्गघरेलू उद्योग योजना य के व्दारा मरहम लगाया था। किंतु यह बिसू की हत्या का मामला भी तुरंत सामने आया। मशाल अखबार के संपादक दत्ताबाबू के सामने भी वे न्याय , लोकहित और ईमानदारी के प्रतिनिधी बनते है,कहते है कि पूरे इमानदारी और सचाई के साथ अपना फर्ज निभाओं ताकि वर्दी की लाज रखी जा सके। बिसू की मौत ने मशाल को प्रजातंत्र की जिम्मेदारी से लैस करके एक महत्वपूर्ण अखबार बना दिया। मशाल अंक का दोबारा छपनेसे यह बात सिध्द होती है। दत्ताबाबू को जिम्मेदार संपादक बनाया गया । कागज का डबल कोटा मंजुर करवाना ,सरकारी विज्ञापन देना ये बातें अपने स्वार्थ के लिए दा-साहब करते दिखायी देते है। मृत बिसु के पिता हीरा के हाथों घरेलु योजना का उदघाटन उन्हें सांत्वन देना, बिसू के हत्यारे को संरक्षण देना, तथा हत्या के मामले को निष्पक्ष जांच करनेवाले एस पी सकसेना को नौकरी से निलंबित करवाना, बिसू की हत्या के मामले में गाँव में उस दिन अनुपस्थित निरपराध बिंदा को गिरफ्तारी, उसके साथ पुलिस की क्रूर निर्मम बेदम मारपीट-इसमें दासाहब का महत्वपूर्ण रोल दिखायी देता है। किसी भी बात को आसानी से सुलझाना , उसे उलट-पुलट कराना दा साहब के लिए बाए हाथ

का खेल हैं। आज भी यही परिस्थिती है। ऐसी घटनाएँ जब होती हैं तब सत्ताधीश पक्ष हो या विपक्ष उसे साधन। माध्यम बनवाकर उस घटना को अहमियत देते हैं और अपनी प्रतिष्ठा बढाने का मौका मानकर उसे आगे बढाते हैं। उस घटना को सत्य असत्य का जामा पहनाकर मनचाहे रंग में रंगाते है।

राजनीति में कमाल हासिल किये हुए दा साहब हर एक की नब्ज पहचानते हैं। राव और चौधरी जो वित्तमंत्रालय और उद्योगमंत्रालय चाहते थे, बात को जानकर दा साहब की कलात्मक प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण है कि आदमी जब अपनी सीमा और सामर्थ्य को भूलकर कामना करने लगे , तो समझ लो पतन की दिशा में उसका काम बढ गया । मूर्ख है दोनों ।और चौधरी , उसकी क्या औकात भला। जो मिला है उसके लायक भी नहीं है वह तो (7)साथ ही कहते हैं-अनुशासन मेरे मंत्रीमंडल की पहली और अनिवार्य शर्त है।साथ ही राव को आदेश देते हुए कहते हैं-शिक्षा मंत्री का पद खाली हो रहा है। राव, तुम सँभालो इस भार को -भावी पीढी का निर्माण करने का सारा दायित्व इसी मंत्रालय पर है । स्वीकारों इस चुनौति को (8) अनुशासन भंग करनेवाले को (दा साहब का अपना व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए अनुशासन) साथ लेकर चलने के लिए दा साहब कतई तैयार नहीं दिखायी देते हैं। इसलिए लोचन की बर्खास्ती के लिए वे राज्यपाल को लिखते हैं कि अब वह मंत्रीमंडल में नहीं रहेंगा । प्रशासनिक निर्णय विवेकपूर्ण और जल्दबाजी से लेने में दा साहब जरा भी चूकते नहीं।

जोरावर को सलाह देते हुए नजर आते हैं कि जमाना बदल रहा है जोरावर, जमाने के साथ बदलना सीखो। सत्य की पृष्ठभूमिपर जाँच करनेवाले एस.पी.सक्सेना के बारे में दा साहब की व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया -पुलिसवालो में जैसी अन्तर्दृष्टी व्यवहारकुशलता और व्यक्तित्व का ओज होना चाहिए वैसा कुछ है नहीं सक्सेना में ...... मै ने उन्हें वहाँ असंतोष दूर करने के लिए भेजा था, फैलाने के लिए नहीं।(9)

पुलिस अधिकारियों को दा साहब समझाते हैं कि घटनावाले दिन बिंदा का अनुपस्थित रहना और बाद में आक्रमक खैया। इन बातों से संदेह के लिए तनिक भी गुंजाइश नहीं रह जाती । सिन्हा और सक्सेना को दृढ चित्त और शांत मुद्रा से आदेश देते हैं कि आश्चर्य हैं सक्सेना या आपको यह बात सूझी नहीं। खैर , एक बार फिर सारे मामले पर नजर डालिए -खुले दिमाग और पैनी नजर से। मुझे बिसू के हत्यारे को पकडना हैं.....वचन दिया हैं मैंने गाँववालों को और अब आप पर छोड रहा हूँ यह काम। ...दा साहब की अन्तदृष्टी से उपजा यह निष्कर्ष, यह तेवर ,यह तैश, यह स्वर उनके जाने के बाद भी जैसे वहीं बना रहा और सिन्हा कुछ देर तक जहाँ के तहाँ खडे रहे- जडवत-अवाक और पूरी तरह विस्मय में डूबे।(10) इस प्रकार मामले को उलटता हुआ देखकर सिन्हा और सक्सेना चूप रहते हैं। करे भी तो क्या करे । अपने निजी स्वार्थ के लिए राजनीतिक दबावतंत्र को अपनाकर, सत्य को छिपाकर लोगोंके मन में भ्रम निर्माण करने में कुछ राजनीतिक लोग उदा.-दा साहब किसप्रकार कमाल हासिल किये हुए हैं , यह बात उपन्यास में तो देखते ही बनती है। कागज का दुगुना कोटा और सरकारी विज्ञापनों से खुश ङ्गमशाल य पत्र के संपादक दत्ताबाबू ङ्गमशाल य में खबर देते हैं कि दोस्ती केआड में बीसू की हत्या करनेवाला बिन्दा गिरफ्तार। दा साहब पढकर खूश होते हैं । डी.आई . जी ने गहरी छानबीन करके विस्मयकारी परिवर्तन करते हुअे घटना की दिशा ही बदल दी थी । इससे डी.आई .जी सिन्हा आई जी के रिक्त स्थानपर पहुँच चुके थे। कुछ स्वार्थी पूलिस अफसर अपने प्रमोशन के लिए गिरपराधी को अपराधी बनाने में जरा भी चूक नहीं करते ।इन बातों पर प्रकाश डाला गया हैं। असत्य-दबावतंत्र -झुठी राजनीति-रिश्वत आदि बातों में परिवर्तन करने के लिए जनता को आवाहन किया गया हैं।

जोरावर के रहते सुकूल बाबू के पक्ष मे वोट नहीं जा सकते। खम ठोककर दा साहब के पक्ष के लोग जीत का ऐलान करते हैं। जोरावर और साथी गिलास भरकर जशन मनाते हैं। सत्ताधारी पक्ष का यही काम दिखायी देता हैं कि जो घटना घटित हुअी है उसे कैसे उलट-सुलट किया जाय। हत्या-आत्महत्या-हत्या इसप्रकार केस को घुमाया जाता है। मरनेवाले दिन बिसू ने अपना अंतिम भोजन बिन्दा के घर किया। हीरा के बयान से साफ है कि शाम का खाना उसने नहीं खाया। डॉक्टरी रिपोर्ट में जिस जहर की बात है,वह दस जहर बारह घंटे बाद असर करनेवाला है। वह जहर इस खाने के साथ ही पहुँचा हैं बिसू के पेट में। खाना खिलाते ही बिन्दा शहर चला गया और दूसरे दिन लौटा । जाने से पहले बिन्दा ने झगडे की बात खुद स्वीकार की।.....और फिर सक्सेना के लिए शब्दों के अर्थ ही गायब हो गये (11) बिन्दा को गिरफ्तारी होती है। उसे बूरी तरह मारा-पीटा जाता है।

ङ्गमैने बिसू को नहीं मारा... मैं बिसू को मार ही नहीं सकता। मुझे तो उसकी आखरी इच्छा पूरी करनी हैं। ....तुमने बिसू को मार डाला। मुझे भी मार डालों । लेकिन देखना बिसू की इच्छा को कोई मार नहीं सकता। ...और फिर बिन्दा के शरीर को रुई की तरह धुनकर वे उसे बेदम कर देते हैं। (12) देश के आम आदमी के इाथ बरती जा रही बर्बरता के साथ गहराता आक्रोश और इस बर्बर अमानुष शोषण से मुक्ती में अदम्य आत्मविश्वास देश का वर्तमान है। रेल के सेकंड क्लास के डिब्बे में सक्सेना की बगल में घुटनों में सिर दिये सिसक रही रूक्मा बुझमी हुअी करूणा और निरीह भारतीय जनता है। राजनीति और राजनीतिज्ञों की हैवानियत, घिनौनी हरकतें और उठा -पटक कर सत्त-सिहांसन हथियाने की होड, यह सब कुछ रफा दफा हो रही इस बीसवी शताब्दी के बाद का, संभवत : इस महादेश का भावी दशक है। (13) सत्ताधीश पक्ष और मुख्यमंत्री की यह कलयुग की जीत हैं। उनके मतानुसार घटना और केस का अंतिम निष्कर्ष फलित होता दिखायी देता है। निरपराध बिन्दापर आरोप लगाये जाते हैं। दा साहब के घर पर पार्टी , पुलिस के मारपीट का जशन, यही महाभोज है । यह महाभोज निरपराध के सत्य को

कुचलकर , झुठे बयानपर किया जाता है, यह राजनीतिक विंडबना है। राजनीति चुनाव के लिए अपनाये जानेवाले हथकंडे , अपराधी तत्वोंका राजनीति में दखल, पुलिस की अपने ही लाभ पर केंद्रीत दृष्टी, बुध्दीजीवियों की तटस्थता और पत्रकारों की अवसरवादिता ये सारे तत्व इस उपन्यास की कथावस्तु में उभरे हैं। दा साहब मुख्यमंत्री और सुकूल बाबू विरोधी पक्ष के नेता, जोरावर राजनीतिक सुरक्षा में पलनेवाला गुंडा और हत्यारा है।(14)

निष्कर्ष – आज के युग में राजनीति के लिए चुनाव महत्त्वपूर्ण केंद्र बिंदु है। इसी आवरण के पोल को खोलकर वास्तविकता का पट खोलने का प्रयत्न मन्नू भंडारी ने इस उपन्यास मे किया है लावारिस शब्द इस्तेमाल करके व्यक्ती और व्यक्ति की ईच्छाएँ –लक्ष्य को ही लावारिस बना दिया गया है जिसपर झुठे राजनतिज्ञ, झुठे पुलिस अधिकारी और भ्रष्टाचारी पत्रकार अपने स्वार्थ भोज का आनंद लूटते हैं। महाभोज की घटना गाँव से निकलकर इसकदर राजनीति में प्रविष्ट हो गयी है कि वह परिवर्तन की आवाज को बुलंद करना चाहती है। उपन्यास का अंत यह ध्वनित करता है कि ङ्गङ्गएक बिसू की हत्या की जा सकती हैं, एक बिंदा को बंद किया जा सकता है एक सक्सेना को सच कहने के अपराध में निलंबित किया जा सकता है, पर न्याय और सत्यनिष्ठा की तीव्र आवाज उठानेवाला यह स्वर लावारिस नहीं है और यह उठता ही रहेगा।ङ्ग(15) जनता को आवाहन करते हैं कि राजनिती में सत्य और इमानदार मनुष्य को ही प्रवेश देना चाहिए। अपने यअमूल्य मतङ्ग का इस्तेमाल कर जनता सत्ता में परिवर्तन कर सकती है। सत्य और इमानदारी की रक्षा हो, वही नेता और प्रशासनिक अधिकारी बने। तभी सामान्य जनता का कल्याण हो सकता है और रामराज्य की स्थापना हो सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1) हिंदी उपन्यास राजकमल प्रकाशन गोपालरा 341 का इतिहास दिल्ली 2005 2) हिंदी उपन्यास गोविंद प्रकाशन वेदप्रकाश अभिताभ125 की दिशाएँ मथुरा 2003 3) महाभोज राधाकृष्ण प्रकाशन, मन्नु भंडारी 8 दिल्ली 1993 4) 9 5) काव्य वैभव लोकभारती प्रकाशन से.दुधनाथ सिंह 24–25 दिल्ली 2006 6) महाभोज मन्नु भंडारी15 7) 128 8 8)–35 9)) 142–143 10) 144 11) 157 12) 158 13) मन्नु भंडारी विद्या प्रिंटर्स गुलाबराव हांडे 180 का कथासाहित्य कानपुर,1987 14) कथाकार नॅशनल पब्लिसिंग अनिता राजुरकर 80–81 मन्नु भंडारी हाउस15) हिंदी की महिला राधाकृष्ण प्रकाशन डॉ. उषा यादव 71 उपन्यासकारों दिल्ली 1999 की मानवीय संवेदना अन्य– साठोत्तरी उपन्यास–डॉ. पारूकान्त देसाई, चिंतन प्रकाशन कानपुर (2002) पत्रिका–इंडिया दुडे आलोचना ।